2006

भारत : नई बुलंदियों की ओर अग्रसर

हमारी आजादी की सालगिरह के मौके पर आप सबको मैं बधाई और मुबारकबाद देता हूं। यह दिन हमारे देश के लिए एक शुभ दिन है। आज हम अपनी आजादी के 60वें साल में कदम रख रहे हैं। आज हम अपने देश की तरक्की और खुशहाली के लिए फिर से संकल्प लेते हैं। सभी लोगों की भलाई व कल्याण के लिए और देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए संकल्प लेते हैं।

आज हम अपने प्यारे तिरंगे को सलाम करते हैं। महात्मा गांधी और उन सभी शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करते हैं जिनकी मेहनत और बलिदान से हमें आजादी मिली। आज हम उन सभी को याद करते हैं जिनकी मेहनत से यह तिरंगा ऊंचा लहरा रहा है और देश तरक्की कर रहा है। हम अभिनंदन करते हैं अपनी सेना के जवानों, किसानों, अध्यापकों, वैज्ञानिकों, मजदूरों और करोड़ों भारतवासियों का, जिनकी कड़ी मेहनत और कोशिशों से भारत विकास की दौड़ में आगे बढ़ रहा है।

पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस को, जब हमारा देश आजाद हुआ, तब हमारे पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने देश को संबोधित करते हुए एक अहम सवाल पूछा था, "क्या हमारे अंदर इतनी हिम्मत और समझ है कि हम अवसर का फायदा उठा सकें और भविष्य की चुनौतियों को कबूल कर सकें?"

प्यारे देशवासियो, आज मैं आपसे फिर वही सवाल पूछता हूं। क्या हम आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं? क्या हमारे अंदर इन चुनौतियों का मुकाबला करने की हिम्मत और समझ है? क्या हम जंग-ए-आजादी के विचारों और सिद्धांतों को फिर से अपनाकर देश को आगे ले जा सकेंगे? क्या हम वह हिम्मत और समझदारी दिखा सकेंगे जिसकी उम्मीद पंडित जी ने एक नए भारत के निर्माण के लिए हमसे की थी?

भारत में विकास का माहौल इतना अच्छा पहले कभी नहीं रहा जितना आज है। हमारी अर्थव्यवस्था सालाना आठ फीसदी की दर से आगे बढ़ रही है। भारत की तारीख में कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि लगातार तीन साल तक विकास इतनी रफ्तार से हुआ हो। देश में जहां कहीं भी मैं जाता हूं, मुझे हर तरफ तरक्की नजर आती है। हमारे औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में जबरदस्त विकास हो रहा है। हमारे उद्योगों में दुनिया की सभी चुनौतियों से निपटने का मजबूत इरादा और हौसला दिखाई दे रहा है। पिछले तीन महीनों में, हमारा

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संबोधन, नई दिल्ली, 15 अगस्त, 2006

औद्योगिक विकास ग्यारह फीसदी तक पहुंचा है और इसमें हमारे नौजवानों और मजदूरों के लिए रोजगार के काफी अवसर पैदा हुए हैं। हमारा सेवा क्षेत्र भी दुनिया की बेहतरीन कंपनियों से मुकाबला करते हुए खूब विदेशी मुद्रा कमा रहा है।

देश में चारों तरफ नई सड़कें बन रही हैं। रेलवे लाइनें बिछाई जा रही हैं। नए बिजलीघर बन रहे हैं। नए हवाई अड्डों का निर्माण हो रहा है। बड़े-बड़े औद्योगिक क्षेत्र और विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) उभर रहे हैं। चारों ओर विकास की हलचल है और यह हलचल करोड़ों भारतवासियों की कड़ी मेहनत का फल है। वे हिम्मत के साथ चलते हुए, नए रास्ते खोजते हुए, हमारे देश को एक सुनहरे भविष्य की ओर ले जा रहे हैं। इसी रास्ते पर चलने से हमारा आर्थिक विकास हो सकेगा। मुझे यकीन है कि केवल आर्थिक विकास से ही हम देश में नए रोजगार पैदा कर सकेंगे और देश से गरीबी मिटा पाएंगे। इसलिए आर्थिक विकास हमारे लिए अहमियत रखता है।

हमें आजादी मिले लगभग साठ साल हो गए हैं। साठ साल का समय किसी प्राचीन सभ्यता के इतिहास में कोई ज्यादा मायने नहीं रखता। लेकिन, एक नौजवान देश के जीवन में साठ साल एक बहुत लंबा समय होता है। इन साठ सालों में दुनिया में बहुत बदलाव आए हैं। यूरोप के साम्राज्य गायब हो गए हैं। एशिया में नई ताकतें उभर रही हैं। जापान कहां था और आज कहां पहुंच गया। चीन कहां था और आज कहां पहुंच गया। दक्षिण-पूर्व एशिया के देश कहां थे और आज वे कहां पहुंच गए। मैं जब उन्हें देखता हूं तो मैं सोचता हूं कि क्या हम अपनी काबलियत का पूरा इस्तेमाल कर रहे हैं या नहीं?

हालांकि भारत तरक्की की राह पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। फिर भी, हमें अपनी मंजिल पाने के लिए काफी सफर तय करना है। आजादी के समय पंडित जी ने हमसे कहा था कि आजाद भारत के सामने दो बड़ी चुनौतियां हैं। एक है, देश में लंबे अरसे से चली आ रही गरीबी, निरक्षरता और बीमारियों को खत्म करने की और दूसरी है, असमानता को दूर करने की। भारत ने इन साठ सालों में काफी लंबा सफर तय किया है, लेकिन गरीबी दूर करने की चुनौती अभी भी हमारे सामने है। अभी भी देश से भुखमरी को खत्म करना है। निरक्षरता को मिटाना है। हर एक भारतीय को सेहतमंद बनाना है।

चारों ओर तरक्की तो हो ही रही है। लेकिन उसे देखकर मुझे कुछ चिंताएं भी होती हैं। जहां एक ओर हम दुनिया के देशों के बीच अपनी सही जगह हासिल करने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर बड़ी तादाद में हमारे कई तबकों के लोग आधुनिकता और विकास से दूर हैं। दो वक्त की रोटी कमाने के लिए वे जी-तोड़ मेहनत कर रहे हैं। वे अभी भी असमान सामाजिक व्यवस्था से पीड़ित हैं। मुझे अहसास है कि देश के कई हिस्सों में हमारे किसान भाई काफी संकट में हैं और काफी मेहनत-मशक्कत के बाद भी उन्हें अपनी जमीन से सही कमाई नहीं हो पा रही है। जब मैं विदर्भ गया तो वहां

के किसानों के हालात ने मुझ पर गहरा असर डाला। इन्हीं हालात की वजह से किसान खुदकुशी करने के लिए मजबूर हो रहे हैं। हमें सोचना होगा कि हम उनकी दिक्कतों को कैसे दूर करें और उन्हें बेहतर आमदनी कैसे दिलाएं?

जब मैं देश में बड़ी-बड़ी विकास परियोजनाएं बनते देखता हूं तो एक तरफ मुझे इनसे होने वाली तरक्की से खुशी होती है। लेकिन, दूसरी तरफ मुझे उन लोगों की भी चिंता होती है जो इन परियोजनाओं से अपने घरों और जमीन से बेदखल हो जाते हैं। शहरों को तेजी से बढ़ते देखकर हमें तरक्की नजर आती है, लेकिन दूसरी ओर, हमें उन शहरों के बीच झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों की भी चिंता सताती है। जब हमारे उद्योग और कारीगर दुनियाभर में अपनी कामयाबी दिखाते हैं, तब हम दुनिया के बाजारों में अपनी सफलता पर खुश होते हैं। लेकिन, जब उन्हीं बाजारों में तेल के बढ़ते दामों की हवाओं से झटके खाते हैं तब हम चिंतित हो जाते हैं। दुनिया के बाजार हमारे लिए फायदेमंद तो हैं लेकिन आम आदमी को वे परेशानी भी दे सकते हैं।

इसी दोहरेपन में तालमेल बिठाना हमारे देश के लिए चुनौती है। चुनौती यह है कि विकास के पहियों को आगे बढ़ाते हुए, समाज के किसी तबके को या देश के किसी इलाके को पीछे न छोड़ दें। चुनौती यह है कि आर्थिक विकास तेजी से हो जिससे उपेक्षित वर्गों के कल्याण के लिए धन जुटाया जा सके। चुनौती यह है कि ऐसा विकास हो जिससे हमारे नौजवानों के लिए रोजगार के अवसर मिलें और उनका भविष्य सुनहरा बन सके।

पिछले दो सालों में इन चुनौतियों से निपटने की हमारी पूरी कोशिश रही है। हमने रोजगार के अवसर बढ़ाने और गांवों व शहरी इलाकों में लोगों की जिंदगी में सुधार लाने के लिए अनेक अहम कदम उठाए हैं।

गरीबी से पीड़ित लोगों को सही आमदनी मिले, इसके लिए हमने ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून लागू किया है। इस कानून के तहत चल रहे कार्यक्रमों में अब तक दो करोड़ से अधिक परिवार शामिल किए गए हैं, और फिलहाल यह दो सौ जिलों में चालू है। धीरे-धीरे पूरे देश में इसका विस्तार किया जाएगा। यह बेमिसाल कानून हमारे गरीब लोगों के लिए सबसे अहम सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम है। मुझे यकीन है कि इस कानून के चलते हम गरीबी को जड़ से मिटाने में जरूर कामयाब होंगे।

भारत निर्माण भी एक ऐसा कार्यक्रम है जिससे हम अपने गांवों को आधुनिक बनाएंगे। जैसे-जैसे हमारे सभी गांवों में बिजली और टेलीफोन की सुविधाएं पहुंचेंगी और वे पक्की सड़कों से जुड़ जाएंगे, तो उनका आर्थिक विकास होगा। जैसे-जैसे उनके खेतों में बेहतर सिंचाई होगी, तो वहां खेती-बाड़ी फले-फूलेगी। पीने के पानी की सुविधा और अच्छे घरों से गांवों में रहने के हालात सुधरेंगे। यह हो जाने के बाद, हमारे गांवों में वही तरक्की

नजर आएगी जो हमारे शहरी इलाकों में दिखाई दे रही है। मुझे खुशी है कि भारत निर्माण के पहले साल में अच्छी प्रगति हुई है और मुझे यकीन है कि 2009 तक इसका असर पूरे देश में दिखाई देगा।

ये योजनाएं 'गरीबी के खिलाफ जंग' में हमारे हथियार हैं। गरीबी के खिलाफ लड़ने का सबसे कारगर हथियार है—रोजगार। रोजगार पैदा करने का सबसे बढ़िया तरीका है—आर्थिक विकास। हमें देश में ऐसा माहौल बनाना होगा जिससे हमारे उद्योग खूब फले-फूलें और रोजगार के अवसर बढ़ें—खासकर औद्योगिक क्षेत्रों में। हमने उद्योगों के विकास के लिए एक माफिक माहौल बनाया है और इसके नतीजे चारों ओर नजर आ रहे हैं। हम न केवल बड़े उद्योगों को, बल्कि ज्यादा से ज्यादा रोजगार देने वाले छोटे उद्योग-धंधों और हथकरघा क्षेत्र को भी बढ़ावा दे रहे हैं। हथकरघों और कपड़ा मिलों में साढ़े तीन करोड़ से अधिक कारीगर काम कर रहे हैं। हम इस क्षेत्र को सस्ता कर्ज मुहैया करा रहे हैं और हथकरघा सहकारी संस्थाओं को भी मजबूत बना रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि आने वाले दिनों में लाखों रोजगार के अवसर इन क्षेत्रों में मिलेंगे।

दो साल पहले मैंने लाल किले से देश को संबोधित करते हुए 'ग्रामीण भारत के लिए एक नई पहल' का ऐलान किया था। इस दिशा में हमने काफी कुछ किया है। हमने तीन सालों में किसानों के लिए कर्ज की सुविधा को दोगुना करने के अपने वादे को लगभग पूरा किया है। हम किसानों को फसल उगाने के लिए सात फीसदी की दर पर कर्ज मुहैया करा रहे हैं। विदर्भ में कर्ज के बोझ से दबे हुए किसानों के बकाया कर्ज के ब्याज को माफ कर दिया गया है और हम खुदकुशी की घटना वाले बाकी जिलों में भी ऐसा ही करेंगे। हमारी कोशिश यह है कि हर एक किसान को किसी संस्था से कर्ज मिले ताकि वे साहूकारों से बच सकें। ऐसी व्यवस्था करने के लिए, हम सहकारी बैंकों के लिए तेरह हजार करोड़ रुपये का पैकेज लागू कर चुके हैं। हम बागवानी, पशुपालन, कपास, गन्ना तथा दूसरी फसलों की ओर खास तवज्जो दे रहे हैं। मछुआरों की आमदनी को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड का गठन किया जा चुका है। खेती में रिसर्च के कामों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस साल के अंत तक देश के हर जिले में कृषि विज्ञान केंद्र चालू होंगे।

इसके बावजूद, मैं मानता हूं कि किसानों की हालत सुधारने के लिए अभी बहुत कुछ किया जा सकता है। खासतौर पर, उन इलाकों में जहां सिंचाई की सुविधाएं नहीं हैं और खेती बारिश पर निर्भर है। हमें अपने किसानों को फायदेमंद कीमतें दिलाने की ओर तवज्जो देनी होगी। मैं अपने उन किसानों की दुख तकलीफों से वाक़िफ़ हूं जो भारी कर्ज में डूबे हुए हैं। किसानों के कर्ज के बोझ को हल्का करने के लिए हमने हाल ही में एक दल गठित किया है जो इस समस्या पर गौर करेगा। मुझे यकीन है कि हम चंद

महीनों में किसानों के कर्ज के बोझ को हल्का करने के लिए कुछ ठोस उपाय कर पाएंगे। सबसे अहम, हमें अधिक से अधिक लोगों को उद्योग तथा सेवा क्षेत्र में रोजगार दिलाना होगा जिससे खेती पर दबाव कम हो सके। हमारी सरकार ऐसा जरूर करेगी।

कृषि क्षेत्र में सुधार लाने की हमारी कोशिशों के नतीजे कुछ इलाकों में साफ दिखाई दे रहे हैं। किसानों को कई फसलों की अच्छी कीमतें मिल रही हैं। इससे उनकी आमदनी भी बढ़ी है। दूसरी तरफ, जब अनाज-दाल जैसी जरूरी वस्तुओं की कीमतें बढ़ती हैं तो आम आदमी को तकलीफ होती है। हमें यह बात समझनी होगी कि यदि हम चाहते हैं कि हमारे किसानों की आमदनी बढ़े तो उनकी पैदा की गई वस्तुओं की कीमतें बढ़ेंगी ही। जब समाज के दूसरे वर्गों की आमदनी बढ़ रही है तो हमारे किसानों की आमदनी क्यों न बढ़े? लेकिन, गरीब तबके के लोगों पर इसका असर न पड़े, इसके लिए हमारी सरकार आवश्यक वस्तुओं को सस्ते दामों पर गरीब और जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाने के लिए वचनबद्ध है।

मुझे मालूम है कि हमारे देश का हर परिवार कुछ जरूरी वस्तुओं की बढ़ती कीमतों से चिंतित है। मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि बढ़ती कीमतों को काबू में रखने के लिए हम हर जरूरी कदम उठाएंगे। लेकिन मैं सभी देशवासियों को याद दिलाना चाहता हूं कि दो साल पहले दुनिया में तेल की कीमत लगभग 30 डालर प्रति बैरल थी। जबकि आज यह लगभग 75 डालर है। दुनिया में तेल की कीमतें दोगुनी से भी ज्यादा होने के बावजूद, हमने अपनी जनता पर इसका खास असर नहीं पड़ने दिया है। मिट्टी के तेल और घरेलू गैस के दामों में कोई बढ़ोत्तरी नहीं होने दी है। परंतु दुनिया में बढ़ती हुई कीमतों के सामने हम कब तक ऐसा कर पाएंगे? हम कब तक इसका बोझ सरकारी खजाने पर डालते रहेंगे? हमें कभी न कभी इसकी वजह से अन्य जरूरी विकास कार्यक्रमों के खर्चों में कटौती करनी ही पड़ेगी। खाने-पीने की चीजों के दामों को आम आदमी की पहुंच में रखने के लिए हमने कुछ चीजों का आयात करने की मंजूरी दी है। इससे हमारे बाजारों में इन चीजों की कमी दूर होगी।

यदि रोजगार और कृषि हमारी मौजूदा चिंताएं हैं, तो अगली चिंता है हमारे बच्चों के भविष्य की। यह जरूरी है कि हमारे बच्चे तंदुरुस्त और शिक्षित हों और वे एक सुनहरे भविष्य की उम्मीदें रखें। इसलिए हम स्वास्थ्य और शिक्षा पर खास जोर दे रहे हैं। ग्रामीण इलाकों में अच्छी सुविधाएं मुहैया कराने के लिए हमने राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन शुरू किया है। इसके तहत दो लाख महिलाएं गांवों में स्वास्थ्य सहायिका के रूप में तैनात की गई हैं। जल्दी ही चार लाख महिलाएं और तैनात की जाएंगी। इनके जरिए हम बच्चों के कुपोषण की समस्या, मलेरिया, टी.बी., एड्स और दूसरी बीमारियों से लड़ेंगे। इन सभी बीमारियों से हमारे लोगों पर भारी आर्थिक बोझ पड़ता है। विदर्भ में मुझे उन परिवारों

के हालात देख कर दुख हुआ जिनके मुखियाओं ने बीमारियों के इलाज के लिए उठाया गया कर्जा अदा न कर पाने के कारण खुदकुशी कर ली। हम बीमारी और गरीबी का बोझ हल्का करने में लोगों की मदद करने के लिए हर संभव कदम उठाएंगे।

हम सर्व शिक्षा अभियान का विस्तार करके देश के सभी बच्चों को स्कूल में दाखिल करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। आज स्कूलों में लगभग बारह करोड़ बच्चों को अच्छा और सेहतबक्श दोपहर का खाना दिया जा रहा है। हमारे इन दोनों कार्यक्रमों का मकसद यही है कि देश के सभी बच्चे अपनी बुनियादी तालीम पूरी करें। सभी देशवासियों से मेरी गुजारिश है कि वे देश के सभी बच्चों को स्कूल में दाखिल कराने की पूरी कोशिश करें। हम अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चों को शिक्षा के माध्यम से शक्तिशाली बनाने पर खास तवज्जो देंगे। हम विकलांग और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के पूर्ण विकास के लिए उनकी हर प्रकार से सहायता करेंगे। हम विकलांग लोगों का पूरा ख्याल रखेंगे ताकि वे समाज में गरिमा के साथ जिंदगी बिता सकें।

ग्रामीण विकास और किसानों की भलाई के लिए हमने जो पहलें की हैं, उन पर सही अमल हमारी पंचायतों की पूरी भागीदारी से ही हो सकता है। इसके लिए, हमारी राज्य सरकारों को पंचायतों को अधिकार देने होंगे। गांवों, जिलों, कस्बों और शहरों के मुकामी प्रशासन में सुधार लाने पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान देना होगा। नगरपालिकाओं में फैले भ्रष्टाचार को मिटाना होगा। इस काम में राज्य सरकारों को अपनी भूमिका निभानी होगी।

शहर और कस्बे विकास के केंद्र हैं जहां अधिक से अधिक रोज़गार के अवसर पैदा होते हैं। हमारे शहरों को एक नया रूप देने के लिए उनमें ज्यादा से ज्यादा निवेश करना होगा। उन्हें साफ-सफाई, पीने के पानी, बिजली और अच्छे मकानों की जरूरत है। उन्हें सार्वजनिक परिवहन, बगीचों और खेल के मैदानों की जरूरत है। हमें ऐसे शहरों की जरूरत है जहां गरीब मजदूर सुखी जीवन बिता सकें और जहां बच्चे और महिलाएं सुरक्षित हों। इसीलिए शहरों में बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाने के लिए और उन्हें रहने लायक बनाने के लिए हमने जवाहरलाल नेहरू शहरी नवीकरण मिशन शुरू किया है। इसके और दूसरे ठोस कार्यक्रमों के नतीजे नजर आने लगे हैं। मुंबई और बंगलुरू में मैट्रो रेल पर काम शुरू हो चुका है। मुझे नए शहरों के निर्माण का एक सुनहरा दशक सामने दिखाई दे रहा है।

सरकार के सामने इन कार्यक्रमों को अमल में लाने की चुनौती है। इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए हमें सरकारी तौर-तरीकों में तब्दीली लानी होगी। लेकिन यह किस तरह से हो? यह कैसे सुनिश्चित हो कि किए जा रहे खर्च के बेहतर नतीजे हासिल हों? मुझे पूरी उम्मीद है कि हमारी सरकार द्वारा अमल में लाए गए सूचना का अधिकार कानून

से हमारे लोग अपने हक का इस्तेमाल करके सरकार को ज्यादा जवाबदेह बना सकेंगे। हमें अपनी जिंदगी के हर पहलू से भ्रष्टाचार मिटाना होगा। हम देश में एक ऐसी व्यवस्था कायम करने की कोशिश करेंगे जहां ईमानदारी, सही आचरण और कुशलता का सम्मान हो।

मानव ज्ञान में भारत का बेहतरीन योगदान रहा है। आज हम एक ऐसे नए युग की दहलीज़ पर खड़े हैं जिसे कई लोग ज्ञान अर्थव्यवस्था कहते हैं। इस नई दुनिया में, हमारा विकास और हमारी जगह ज्ञान पर आधारित होगी। इसलिए, हमें नए रिसर्च और नई सोच में सबसे आगे बने रहना होगा—खासकर विज्ञान व प्रौद्योगिकी में। हमें बेहतरीन संस्थाएं बनानी होंगी। हमने कोलकाता, पुणे और पंजाब में तीन नए भारतीय विज्ञान, शिक्षा तथा अनुसंधान संस्थान पर काम शुरू कर दिया है। हमने एम्स के बराबर के उन्नीस अस्पतालों पर भी काम शुरू कर दिया है। आने वाले कल में हमें अपने नौजवानों के लिए उच्च शिक्षा के अधिक से अधिक मौके उपलब्ध कराने होंगे, ताकि वे न केवल शिक्षित नौजवान बनें बल्कि काबिल भी बनें। हमारे देश में हो रहे आर्थिक विकास और तरक्की के बीच मुझे चारों ओर से कुशल कर्मचारियों की कमी की गूंज सुनाई दे रही है। इतनी बड़ी आबादी वाले देश में ऐसी गूंज नहीं होनी चाहिए। इस कमी को दूर करने के लिए हम एक वोकेशनल एजुकेशन मिशन शुरू करने की सोच रहे हैं।

जैसे-जैसे देश में शिक्षा के अवसर बढ़ेंगे, हमें यह देखना होगा कि ये अवसर समाज के सभी उपेक्षित और कमजोर तबकों को भी मिलें। हमारी सरकार शिक्षण संस्थाओं में सामाजिक तौर पर पिछड़े सभी वर्गों के छात्रों को आरक्षण देने के लिए कटिबद्ध है। ऐसा करते समय, हम सभी नौजवानों के लिए शिक्षा के अवसर बढ़ाएंगे। यह हमारा पक्का वादा है। इस तरह, शिक्षा में सभी को स्थान देते समय, हम काबलियत और कड़ी मेहनत की कदर भी करेंगे।

देश के चहुंमुखी विकास के लिए काम करते समय हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि उसका बुरा असर बेदखल लोगों पर न पड़े। ना ही उसका असर हमारे पर्यावरण पर पड़े और ना ही देश का कोई इलाका पीछे छूट जाए। हमारी सरकार जल्दी ही एक पुनर्वास नीति लागू करेगी ताकि बेदखल लोग गरीबी के शिकार न बनें और विकास में हिस्सेदार बनें। हमने अपने पर्यावरण और वन्य जीवन, खासकर, बाघों को बचाने के लिए कई ठोस कदम उठाए हैं। पिछड़े इलाकों के विकास के लिए हमारी सरकार *बेकवर्ड रीजन ग्रांट फंड* के जरिए ठोस कदम उठाएगी और ढाई सौ जिलों पर सालाना पांच हजार करोड़ रुपये खर्च करेगी।

हमारी एक और चिंता है राष्ट्रीय सुरक्षा। भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए दो बड़े खतरे हैं, आतंकवाद और नक्सलवाद। एक महीने पहले मुंबई शहर पर एक भयंकर आतंकवादी हमला हुआ जिसमें कई बेगुनाह लोगों की जानें चली गयीं और अनेक लोग

घायल हो गए। पूरे देश ने मुंबई के दर्द को महसूस किया। इन दर्दनाक घटनाओं से मुंबई नहीं झुका और उसने अपनी हिम्मत और संयम का परिचय दिया।

उस समय मैंने मुंबई में कहा था कि अब हमें आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए पुराने तौर-तरीके बदलने होंगे। आतंकवादी हमारी बढ़ती हुई आर्थिक ताकत को कमजोर करना चाहते हैं। हमारी एकता को तोड़ना चाहते हैं। देश में सांप्रदायिक दंगे भड़काना चाहते हैं। हम ऐसा नहीं होने दे सकते। एकता में ही हमारी ताकत है। हम देश के धर्मनिरपेक्ष माहौल को बिगड़ने नहीं देंगे।

मैं हर एक नागरिक को यकीन दिलाता हूं कि हम अपनी एकता और अखंडता को बनाए रखने, देश को सुरक्षित रखने और हर नागरिक की हिफ़ाज़त करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। हम अपने सुरक्षाबलों और खुफिया एजेंसियों को आधुनिक बनाएंगे। भारत में आतंकवादियों को पूरी तरह खत्म करने के लिए सख्त कदम उठाएंगे। जो हमें हजार घाव देकर चोट पहुंचाना चाहते हैं, वे यह याद रखें, कि कोई भी हमारे इरादों और एकता को तोड़ नहीं सकता। कोई भी भारत को झुका नहीं सकता।

जहां एक तरफ हम समय-समय पर आतंकवाद के शिकार होते रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ हमें शांति की जीत भी दिखाई देती रही है। जम्मू-कश्मीर के लोग आज भी आतंकवाद से पीड़ित हैं। लेकिन, उन्हें अमन-चैन और तरक्की की नई रोशनी भी दिखाई दे रही है। आने-जाने के नए रास्ते खुलने से नियंत्रण रेखा के दोनों तरफ के लोग एक-दूसरे के और करीब आए हैं। श्रीनगर से मुजफ्फराबाद के रास्ते, पुंछ से रावलकोट के रास्ते। हमने गोलमेज सम्मेलन के माध्यम से जम्मू-कश्मीर के सभी गुटों और दलों से बातचीत शुरू की है। हम वहां के लोगों के बेहतर भविष्य के लिए नए रास्ते खोज रहे हैं। एक ऐसा भविष्य जहां वे बेखौफ होकर शांति, संपन्नता और इज्जत की जिंदगी जी सकें।

आज पूर्वोत्तर राज्यों के लोग उम्मीद भरी निगाहों से भविष्य की ओर देख रहे हैं। पिछले दो सालों में पूर्वोत्तर राज्यों ने विकास के सभी क्षेत्रों में काफी तरक्की की है। बेहतर सड़कें, बेहतर रेल यातायात, पहले ताप बिजलीघर का निर्माण और बेहतर विश्वविद्यालय। मुझे यकीन है कि आने वाले चंद सालों में पूर्वोत्तर इलाका देश के बाकी इलाकों के बराबर आ जाएगा। लेकिन, वहां अभी भी कुछ राज्य उपद्रवों के शिकार हैं। उन राज्यों के लोग अमन-चैन चाहते हैं। हम उपद्रव का डटकर मुकाबला करेंगे ही। लेकिन, हमें आशा है कि वहां के कई गुटों से जो बातचीत जारी है, उससे वहां शांति कायम हो सकेगी। प्रगति, खुशहाली और इज्जत का जीवन वहां के लोगों का हक है और हम इसे दिलाएंगे।

जो लोग गलती से नक्सलवाद के रास्ते पर चल पड़े हैं, मैं उन्हें समझाना चाहता हूं कि लोकतांत्रिक भारत में सत्ता कभी भी बंदूक से हासिल नहीं हो सकती। बल्कि असली ताकत मतपेटी से मिलती है। हमारी राज्य सरकारों को आदिवासियों और छोटे किसानों

के कल्याण पर खास तवज्जो देनी होगी। उनके दुख-दर्द का नक्सली फायदा उठाते हैं। लेकिन हमें मानना होगा कि हिंसा के रास्ते पर चलकर कभी भी गरीबों की समस्याएं सुलझाई नहीं जा सकतीं। हमारे सुरक्षा बल नक्सलियों द्वारा फैलाई जा रही हिंसा का समुचित जवाब देंगे।

पिछले एक माह में देश के कई इलाके खासकर आंध्र प्रदेश, सूरत और महाराष्ट्र बाढ़ के शिकार हुए हैं और वहां जान-माल का बहुत नुकसान हुआ है। हम इन इलाकों के लोगों को हर संभव मदद देंगे।

हर भारतीय अपने पड़ोस में अमन-चैन और खुशहाली के साथ जीना चाहता है। हमारे पड़ोसी देशों के लोग भी यही उम्मीदें रखते हैं। दक्षिणी एशिया में सांस्कृतिक और आर्थिक साझापन है। हमारा अतीत, भविष्य और किस्मत भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। भारत इस क्षेत्र में सबसे बड़ा देश होने के नाते, अपनी आर्थिक खुशहाली में, अपने हमसायों को शामिल करने के लिए तैयार है। हमारे दक्षिण एशियाई समुदाय का एक सपना है, जहां सीमाओं का कोई बंधन न हो। जहां लोगों और व्यापार की बेरोकटोक आवाजाही हो। जहां संस्कृति तथा विचारों का बहाव हो। लेकिन, यह सपना तब तक पूरा नहीं हो सकता, जब तक कि इस सपने पर आतंकवादी हिंसा और नफरत व टकराव की राजनीति की काली छाया पड़ती रहेगी।

हम अपने लोगों को अमन-चैन और खुशहाली के एक नए युग में ले जाने के लिए, अपने सभी पड़ोसियों के साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार हैं। हमने इस संबंध में कई पहलें की हैं, खासतौर पर पाकिस्तान के साथ। लेकिन, इन पहलों की सफलता के लिए शांति जरूरी है। यह साफ है कि जब तक पाकिस्तान अपने नियंत्रण वाले, किसी भी इलाके से, भारत के खिलाफ आतंकवाद को रोकने के अपने वादों पर, अमल करने के लिए ठोस कदम नहीं उठाता, तब तक, भारत में शांति प्रक्रिया का समर्थन करने वाला जनमत, कमजोर होता रहेगा। हमारे क्षेत्र के सभी देशों को यह बात समझनी होगी कि आतंकवाद चाहे कहीं भी हो, वह सभी के लिए खतरा है। इसका हमें एकजुट होकर मुकाबला करना होगा। हमारे लोग शांति और साझा विकास के हिमायती हैं और हमें इस दिशा में मिलकर काम करना होगा।

पिछले दो साल में हमने दुनियाभर में एक ऐसा माहौल बनाया है जो हमारी तरक्की की उम्मीदों के अनुकूल है। अमरीका, चीन, जापान और यूरोपीय संघ के साथ हमारे संबंध इतने अच्छे पहले कभी नहीं रहे जितने कि आज हैं। हमने रूस के साथ अपनी पुरानी दोस्ती तथा भागीदारी को और मजबूत किया है। दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत का पूर्व एशियाई शिखर सम्मेलन में स्वागत किया गया है। हमने खाड़ी और अरब देशों के साथ अपने राजनीतिक और आर्थिक संबंध बढ़ाए हैं। हमारा ध्यान अब अफ्रीका और लेटिन

अमरीका के देशों पर है। हम कह सकते हैं कि इस तरह, भारत के संबंध दुनियाभर में अच्छे बन रहे हैं। भारत में आजादी से लेकर आज तक हुई तरक्की की दुनिया कदर करती है और वह चाहती है कि हमारे देश का तेजी से विकास हो।

भारत एक नौजवान देश है। भारत नौजवानों का देश है। हर नौजवान जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए, कड़ी मेहनत करने के लिए तैयार है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी हमारे नौजवानों के सुनहरे भविष्य के बारे में बहुत सोचते थे और इस दिशा में उन्होंने कई कदम उठाए।

आज भी हमारे नौजवान एक सुनहरे कल की खोज में हैं। वे नए अवसरों और संभावनाओं की तलाश में हैं। उनमें एक नई सोच है। वे पुरानी सोच और सिद्धांतों पर समय बरबाद नहीं करना चाहते। वे एक नए भारत का निर्माण करना चाहते हैं। हमें उनके सपनों के भारत का निर्माण करना होगा। मैं चाहता हूं कि हमारे सभी नौजवान एक-दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर साथ चलें, और एक नए भारत के निर्माण के लिए, हमारे साथ आगे बढ़ें। हर नौजवान को भारत के भविष्य में यकीन होना चाहिए। उन्हें यह यकीन होना चाहिए कि देश में सभी को अपनी काबलियत दिखाने के मौके जरूर मिलेंगे।

हम एक ऐसे भारत का सपना देखते हैं जिसमें हर महिला अपने आपको सुरक्षित समझे और उसे पूरे हक मिलें। जहां हमारी माताओं, बहनों और बेटियों को आदर, गरिमा और हिफ़ाज़त की जिंदगी मिले। हमें गर्भ में मादा शिशुओं की हत्या रोकनी होगी। लड़कों और लड़कियों में फर्क को खत्म करना होगा। हमें महिलाओं को शिक्षित और काबिल बनाना होगा जिससे वे नई पीढ़ी को मार्ग दिखाने के काबिल बन जाएं।

हमारे देश के कानून, नागरिकों की रक्षा के लिए हैं। कानून का राज वास्तव में तभी होगा जब लोगों को दिखे कि सही इंसाफ किया जा रहा हो। जब नागरिकों के अधिकारों की रक्षा हो रही हो। इसके लिए हमें एक ज्यादा कारगर, क्यावान और जवाबदेह पुलिस की जरूरत है। हमें एक अधिक सक्षम और असरदार न्यायपालिका की भी जरूरत है। हमारी सरकार इस दिशा में काम करेगी।

आज, मैं, इस ऐतिहासिक लाल किले से, आप सभी से गुज़ारिश करता हूं कि आप एक नए भारत के निर्माण के लिए फिर से जुट जाएं।

एक ऐसा भारत जो भावना में एक हो। भाषा तथा मज़हब के आधार पर बंटा न हो।

एक ऐसा भारत जो भारतीयता में एक हो। जाति और प्रांत के आधार पर बंटा न हो।

एक ऐसा भारत जो विकास की खोज में एक हो। गैरबराबरी के आधार पर बंटा न हो।

एक ऐसा भारत जो सबका हो और जो सब लोगों का ख्याल रखे।

हमारे मजहब अलग हैं। जातियां अलग हैं। जुबानें अलग हैं। मगर, हम हैं सब हिंदुस्तानी। हमारी तरक्की में ही देश की तरक्की है। हमारा और हमारे देश का भविष्य एक है और इसे हम सब मिलकर उज्ज्वल बना सकते हैं।

हमें अपने सपनों को साकार करने के लिए एक अनुकूल राजनीति की जरूरत है ऐसी राजनीति की, जो हमें आगे ले जाए। एक ऐसी राजनीति की, जो हमें नए मुकामों की राह बताए। मैं सभी राजनेताओं से गुज़ारिश करता हूं कि वे देश के भविष्य के बारे में गहराई से सोचें। हमें आपस में बांटने वाली सियासत से दूर रहकर, बदलाव और तरक्की की सियासत अपनानी होगी। हमारे राजनीतिक दलों और राजनेताओं को आपसी तालमेल के साथ काम करना होगा। देश के कई मसलों पर आम सहमति बनानी होगी। यदि हम ऐसा करेंगे तो मुझे यकीन है कि हम जल्दी ही उस सुनहरे भविष्य को हासिल कर सकेंगे जिसके लिए हमारे करोड़ों देशवासी आशा भरी निगाहों से इंतजार कर रहे हैं।

आओ, हम सब मिलकर, हाथ में हाथ मिलाकर, एक नया भारत बनाएं।